[श्री शरद यादव]

भी एलओपी ने जो बात कही है, मैं इसको कोई ऐसी चीज़ नहीं बनाना चाहता, जिससे लगे कि इसमें हमारा कोई दुराग्रह है। हमारा आग्रह यह है कि इस सदन में प्रधान मंत्री जी ने पहले दिन आकर राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर हमारी बातों को सुना। यह बेहतर होता कि प्रधान मंत्री जी इस समय भी आते, जैसे मान लीजिए, the Minister of State in the Ministry of Parliamentary Affairs जो बोल रहे हैं, वे ऐसी बात कह रहे हैं, जो उनके वश में नहीं है। मैं इसलिए सारे लोगों से कहना चाहता हूँ, जो मंत्रीगण बैठे हैं, उनसे भी और आपसे भी, कि यदि वे यहाँ आ जायें और जो लोग यहाँ बोलने वाले हैं, उनकी बात को यदि सुन कर जवाब देने का काम हो, तो वह कारगर होगा। इससे इस सदन में जो बहस है, वह एक तरह से एकतरफा नहीं होगी। वह बहस को एकतरफा चलाकर जाना चाहते होंगे, तो यह ठीक नहीं है। यानी एकतरफा भाषण देना और सदन के जो लोग बैठे हुए हैं और जो बोल रहे हैं, उनके साथ संवाद नहीं करना, मेरा कहना है कि यह ठीक बात नहीं है। आप तो इस सदन के मालिक हैं, इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि एलओपी ने जिस बात की माँग की है, यदि यह पूरी हो जाय, तो यह ज्यादा बेहतर होगा, आपके लिए भी बेहतर होगा।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Parliamentary Affairs Minister has not said that the Prime Minister is not coming. He may come any time, that is what he said, that is what I understand. But he cannot give assurance at what particular time he will come or not because he also does not know that. That is about the Minister.

As far as I am concerned, the Chair cannot compel a Minister or even the Prime Minister to be present here unless it is Question Hour where he has to reply to the question or he is to pilot a Bill. Otherwise, the Chair cannot ask a particular Minister, including the Prime Minister, to be present here because the rule does not provide for that. If the Cabinet Minister is here ...*(Interruptions)*... Let me complete. It is collective responsibility. As far as the Chair is concerned, that is enough. ...*(Interruptions)*... Let me complete. But the impression that whatever is spoken here is not known to the Prime Minister is not the correct thing. Whatever is spoken here will be reported to the Prime Minister. He will be privy to all those pieces of information and I believe when he replies, he will refer to those things also. Don't think that because he is not here, he is not getting the information. There is a system for that. There is a system by which the Prime Minister is given this information. In any way, I cannot give a direction or a ruling that the Prime Minister should be here. Therefore, as decided, let us start the discussion.

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से इतना तो सारे विपक्ष की तरफ से कहना चाहता हूँ कि माननीय मंत्री जी प्रधान मंत्री जी को यह convey करवा दें, चर्चा शुरू हो जाएगी, चर्चा के दौरान वे किसी वक्त आ जाएं और उसके बाद अपनी बात कहें।

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः सर, ठीक है, जो बात माननीय सदस्य कह रहे हैं, वह ठीक है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, please.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS--*Contd.*

श्री नरेश अग्रवाल : माननीय उपसभापति जी, आप इसे प्रोटेस्ट समझ लीजिए, वैसे तो प्रोटेस्ट नहीं करना चाहिए, लेकिन मैं इस प्रोटेस्ट के साथ शुरुआत कर रहा हूँ कि ससदीय कार्य राज्य मंत्री ने हम लोगों की भावना प्रधान मंत्री जी को नहीं पहुंचाई, अगर पहुंचाई होती, तो प्रधान मंत्री जी निश्चित ही सदन में आते और सबकी भावना सुनते। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is an escape route.

श्री नरेश अग्रवालः श्रीमन्, मैंने महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जो संशोधन दिया है, उस पर बल देने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ। इस सदन के पूर्व सदस्य श्री उदय प्रताप सिंह की चार लाइनें मैं कहना चाहता हूँः

"न तेरा है, न मेरा है, हिन्दुस्तान सबका है,
नहीं समझी गई यह बात, तो नुकसान सबका है।
यहां मिलती हैं जो नदियां, वह दिखलाई नहीं देतीं,
महासागर बनाने में, मगर अहसान है सबका।"

श्रीमन्, मैं एक किस्से के साथ शुरुआत करूंगा। माननीय संसदीय कार्य राज्य मंत्री तथा अन्य मंत्री यहां बैठे हैं। एक आपका बड़ा समर्थक था, जब आपकी सरकार बनी, तो मारे खुशी के वह कोमा में चला गया।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Naresh Agrawalji, beware of the time. Only ten minutes. Strictly ten minutes. Not even one minute more. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवालः श्रीमन्, मुझे शुरुआत कर लेने दीजिए, किस्सा सुन लीजिए, उसके बाद दस मिनट जोड़ दीजिएगा। एक आपका समर्थक था, जब प्रधान मंत्री जी ने शपथ ली, तो श्रीमन्, खुशी में वह कोमा में चला गया। दस महीने हुए, तो अब उसका कोमा उतरा। जब कोमा खत्म हुआ, वह होश में आया, तो उसने डॉक्टर से पांच-छः प्रश्न पूछे। उसने पहला प्रश्न पूछा कि क्या हिन्दुस्तान में भ्रष्टाचार समाप्त हो गया? क्या चीन की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो गई या अभी भी चीनी है? ओबामा साहब प्रधान मंत्री जी के सामने नाक रगड़ रहे हैं या प्रधान मंत्री जी ने उनको माफ कर दिया? लाहौर, राजस्थान या पंजाब, किसका जिला हो गया? अपना बेटवा गांव से इंदौर जाने के लिए बुलेट ट्रेन पर जाएगा या हवाई जहाज पर जाएगा? काला धन गिनने में अभी कितना और समय लगेगा? सब्जी, प्याज, टमाटर तो सब फ्री हो ही गया होगा, चूंकि नई सरकार आ गई, इसलिंए महगाई तो खत्म ही हो गई? धारा 370 हटाने के बाद कितने दंगे हुए और राम मंदिर तो बन ही गया होगा? श्रीमन्, इतने प्रश्न सुनने के बाद वह डॉक्टर खुद ही कोमा में चला गया। डॉक्टर का मतलब, इस देश की सरकार, इस देश की पूरी जनता कोमा में चली जा रही है। ...(**व्यवधान**)...

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री (श्री थावर चन्द गहलोत): गनीमत है कि आपके ऊपर कोई असर नहीं पड़ा।

श्री नरेश अग्रवालः चलिए, आपने कम से कम इतना समझा तो। अभी समझे रहिए, आप लोगों को थोड़े दिन में पता लगेगा। श्रीमन्, पूरे देश की जनता एक तरीके से कोमा में चली गई और जनता इस मारे कोमा में चली गई, क्योंकि चुनाव के समय सब्जबाग दिखाया गया था। मैं चुनाव के बाद की बात कर रहा हूँ।

15 अगस्त को प्रधान मंत्री जी ने लाल किले से भाषण दिया, उसको हम सबने सुना। वह प्रधान मंत्री जी का राष्ट्र को पहला संबोधन था। प्रधान मंत्री जी ने अपने भाषण में सभी से कहा कि आइए, राजनीति से ऊपर उठ कर हम सब इस देश के निर्माण में जुटें, साम्प्रदायिकता हटाएं, देश को विकास की ओर ले जाएं, उन्नतशील देश बने। हमने सोचा कि शायद यहीं पर से एक शुरुआत होगी, एक नया हिन्दुस्तान बनाने की बात होगी, लेकिन श्रीमन्, उसके बाद इन्हीं के दल के, इन्हीं के sister concern, चाहे साध्वी ज्योति निरंजन हों, मैं यह नहीं पढ़ूंगा कि उन्होंने क्या-क्या बोलीं, चाहे साक्षी महाराज जी हों, हमारे बजरंगी भाई कहीं चले गए, इनके प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मीकांत वाजपेयी, मोहन भागवत जी, जो एक तरीके से प्रधान मंत्री जी से ऊपर इनकी पार्टी में हैं, आर.एस.एस. के प्रमुख हैं, उनके भी निरंतर बयान आ रहे हैं। मदर टेरेसा तक पर उनका बयान आ गया। चाहे साध्वी प्राची हों, इन तमाम नेताओं के विधिवत एक तरीके से, सुनियोजित तरीके से जो बयान आ रहे हैं, क्या हम लोग सोचें, क्या देश सोचेगा? हम किसकी बात का विश्वास करें? प्रधान मंत्री जी की बात का विश्वास करें या प्रधान मंत्री जी के दल के जो अनेक हिस्से हैं, उनका विश्वास करें? लोक सभा में प्रधान मंत्री जी ने बड़ी जोर-शोर से कहा, यहाँ पिछली बार हमारे बीच टकराव इसी बात पर रहा कि प्रधान मंत्री जी इसको क्लीअर कर दें और आज भी उस पर प्रश्नचिह्न लगा हुआ है, आज भी वह स्पष्ट नहीं है। मैं चाहूँगा कि प्रधान मंत्री जी आज इस बात को स्पष्ट करें कि देश की सरकार मजबूत है कि उस सरकार के सिंस्टर कन्सन? मैं नाम नहीं लेना चाहूँगा। कोई हिन्दू समागम कर रहा है, कोई कुछ कर रहा है। वे लोग सुप्रीम हैं, वे लोग देश को चलाएँगे। अगर हम सबसे मिलने की बात करते हैं, अगर आप सबसे सहयोग लेने की बात करते हैं, तो कॉमन मिनिमम प्रोग्राम वैसा न बनाइए जैसा आप कश्मीर में बनाकर आए हैं। आप सहयोग की बात करते हैं, तो जब आप एक हाथ आगे बढ़ेंगे, तब हम एक हाथ आगे बढ़ेंगे। दुःख हुआ। तीन दिन पहले प्रधान मंत्री जी श्रीनगर में मौजूद थे। एक नया गठजोड़ हुआ। अवसरवादिता की चरम-सीमा! राजनीति में अवसरवादिता तो देखी है, लेकिन उसकी चरम-सीमा भी देखने को मिली कि जो भाजपा 370 हटाने की बात करती थी, जो भाजपा इस देश से आतंकवाद खत्म करने की बात करती थी, 56 इंच सीने की बात करती थी, उसी भाजपा ने उन लोगों से हाथ मिलाया जो आतंकवादियों के संरक्षण में पल रहे हैं। कश्मीर के मुख्य मंत्री जब हिन्दुस्तान के गृह मंत्री थे तब उनकी बेटी का अपहरण हुआ था। श्रीमन्, मुझे याद है कि तब वे अपनी बेटी की कुर्बानी नहीं दे पाए थे, इस देश की कुर्बानी दे दी और तमाम आतंकवादियों को छोड़ दिया। उस आदमी को आपने क्या बनाया? मुख्य

मंत्री बनते ही उसने यह बयान दिया कि कश्मीर के चुनाव पाकिस्तान की वजह से, आतंकवादियों और अलगाववादियों की वजह से हुए, वे चुनाव इस देश की सेना की वजह से नहीं हुए, इस देश के निवासियों की वजह से नहीं हुए! आप चुपचाप सुनते रहे, प्रधान मंत्री चुपचाप सुनते रहे। श्रीमन्,* है इसमें और कल कश्मीर के ...(**व्यवधान**)...

श्री शमशेर सिंह मन्हास (जम्मू और कश्मीर): महोदय, ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please.

श्री नरेश अग्रवाल: नये सदस्य हैं, अभी सच्चाई सुनने में तकलीफ हो रही है। ...(**व्यवधान**)... 35 साल हो गए हैं। श्रीमन्, कश्मीर विधान सभा के सात एमएलएज़ ने उस अफजल गुरु की बात की, जो इस संसद पर आक्रमण का दोषी था, जिसने संसद पर हमला किया, हिन्दुस्तान के संविधान पर हमला किया। इस संसद पर हमला हुआ तो वह हमला हिन्दुस्तान के संविधान पर हुआ और आपने उसके पक्ष की बात की और भारतीय जनता पार्टी का समर्थन उनको है! आप भी मंत्री बन गए। अवसरवादिता बहुत दिनों तक नहीं चलती है, यह बात ध्यान में रखिएगा। अगर जनता ने आपको जनादेश दिया, तो जनता जनादेश वापस लेना भी जानती है, ऐसा इस देश का इतिहास रहा है। इस देश में इंदिरा गांधी से बड़ा कोई नेता नहीं हुआ, लेकिन इस देश में इंदिरा जी भी चुनाव हारीं और उनकी पार्टी भी बुरी तरीके से परास्त हुई, कथनी और करनी के अंतर में। मैं चाहूँगा कि आज प्रधान मंत्री जी जवाब दें। कश्मीर में उन्होंने जो समर्थन दिया है, एक* सरकार बिठा दी है, जो पाकिस्तान परस्त सरकार है। आप यह मानकर चलिए कि अमेरिका हमारा कभी दोस्त नहीं हो सकता और पाकिस्तान हमसे कभी हाथ नहीं मिला सकता। जीवन की इस सत्यता को आप मानकर चलिए। उस* सरकार को आपका समर्थन कब तक रहेगा और जो वहाँ हो रहा है उस पर केन्द्र सरकार क्या कार्रवाई करेगी?

श्रीमन्, काले धन के बारे में हम सब लोगों ने सुना। इन्होंने चुनाव में कह दिया कि 1 लाख 80 हजार करोड़ रुपये से ऊपर विदेश में काला धन है और जब हम उसे वापस लाएँगे तो हरेक हिन्दुस्तानी के खाते में 15-15 लाख रुपये जमा हो जाएँगे। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, there is no time. ...*(Interruptions)...*

श्री नरेश अग्रवाल : एम0आई0एम0 जो पार्टी है जिसको आप समर्थन दे रहे हैं, जानते हो उन्होंने आज आपके बारे में क्या बोला है, आर0एस0एस0 कुंवारों का क्लब है, और आगे क्या बोला हम कहना नहीं चाहते। तो आप समझ लीजिए कि आगे क्या बोला होगा। श्रीमन्, आप चिल्ला रहे हैं कि हम काला धन वापस लाएंगे। बजट सेशन में कह दिया कि नया कानून बनाएंगे, दस साल की सजा होगी, सात साल की सजा होगी। ...(**व्यवधान**)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nareshji, your time is over. What can I do?

*Expunged as ordered by the chair.

श्री नरेश अग्रवाल : अभी तो हमने शुरुआत ही की है।...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is why I cautioned you. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : अभी तो यह अंगड़ाई है, आगे और लड़ाई है। श्रीमन्, अभी तो शुरुआत हुई है।...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I told you that you have only ten minutes. You have to manage in that. What can I do? There are others.

श्री नरेश अग्रवाल : श्रीमन्, काला धन के लिए मैं तो कहूंगा कि अगर आप देश की जनता के सामने सत्य बोल दें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। साफ क्यों नहीं कह देते कि काला धन एक सपना है, काला धन वापस नहीं आ सकता। क्योंकि अगर काला धन होगा भी, यह प्रधान मंत्री जी क्यों नहीं कह देते, आप साफ-साफ कह दीजिए कि जिनका काला धन था उन्हें निकालने का हमने मौका दे दिया और कोई काला धन वापस नहीं आएगा। श्रीमन्,...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : मैं क्या करूं, There are five more speakers.

श्री नरेश अग्रवाल : फिर बेकार ही नाम दिया था, इससे क्या फायदा होगा? फिर बेकार में बोला।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : आपने अच्छा बोला।

श्री नरेश अग्रवाल : फिर बोलने का फायदा क्या हुआ श्रीमन्। मुद्दे सारे बाकी हैं, अभी तो कोई शुरुआत ही नहीं हुई। अभी तो...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : मैं क्या करूं? Keep them for future. There will be other occasions.

श्री नरेश अग्रवाल : हम अगर कड़वा बोलेंगे तो बुरा लगेगा।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nareshji, there will be other occasions. Keep them with you for those occasions.

श्री नरेश अग्रवाल : मैं अब अंत किए देता हूं। मैं सिर्फ आज इतना जरूर चाहूंगा कि प्रधान मंत्री जी जब अपना रिप्लाई दें तो कम से कम हिन्दुस्तान की विदेश नीति के बारे में जरूर बतला दें। कभी हम अमेरिका के आगे, कभी हम रूस के साथ, कभी हम चीन का स्वागत कर रहे हैं, पाकिस्तान को माथे पर बिठा रहे हैं। जो सबका होता है, एक किस्सा मैं सुना दूं। एक हिन्दू और दूसरा मुसलमान, दो लड़के थे, आपस में बड़ी दोस्ती थी। तो दोनों छत पर चढ़ गए। हिन्दू ने कहा कि हमारे भगवान में ज्यादा ताकत है और मुसलमान लड़के ने कहा कि हमारे अल्लाह में बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि चलो, दोनों छत से कूदते हैं और अपने भगवान का नाम लेना, अल्लाह का नाम लेना, देखें किसमें

ताकत है? श्रीमन्, जब हिन्दू कूदा तो नीचे गिरा और उसके हाथ-पैर टूट गए। जब मुसलमान का लड़का कूदा तो साफ बच गया। तो उसने पूछा कि तुम कैसे बच गए? उन्होंने कहा कि हमारा तो एक ही अल्लाह था, हमने उनका नाम लिया तो उन्होंने हमें बचा दिया। हिन्दू लड़का बोला कि हमने अपने सारे देवी-देवताओं के नाम ले डाले, किसी ने हमको नहीं बचाया। तो उन्होंने कहा कि* ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. ...*(Interruptions)*... Now, Shri K.C. Tyagi. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रभात झा : ऐसे किसी का अपमान मत करिए।...(**व्यवधान**)...

श्री नरेश अग्रवाल : अब देख लीजिए साहब,...(**व्यवधान**) एक बात जान लीजिए। माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी,...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nareshji, please. ठीक है।...(**व्यवधान**)... नरेश जी, बस।

श्री नरेश अग्रवाल : मैं सिर्फ इतना चाहूंगा कि प्रधान मंत्री जी,...(**व्यवधान**)...

श्री अनिल माधव दवे : सर,...(**व्यवधान**)...

श्री नरेश अग्रवाल : हिन्दुओं के * तुम नहीं हो। हम भी हिन्दू हैं, हमसे बड़े क्या हिन्दू होगे?...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : नरेश जी, ठीक है। Mr. Minister wants to speak...(**व्यवधान**)...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः माननीय नरेश अग्रवाल जी ने जो उदाहरण दिया है, मुझे लगता है कि वह बिल्कुल ठीक नहीं है और उसको एक्सपंज करना चाहिए, उसको रिकार्ड से निकाल देना चाहिए।...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will go through the records and expunge whatever is objectionable.

श्री नरेश अग्रवाल : नहीं, माननीय उपसभापति महोदय, ये हिन्दुओं के* नहीं हैं।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : ठीक है, I told you that I will do that if there is anything objectionable. Now, Shri K.C. Tyagi.

प्रो. राम गोपाल यादव : यह बात वे लोग कह रहे हैं...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will go through the records. ...*(Interruptions)*...

*Expunged as ordered by the chair.

श्री नरेश अग्रवाल : सर, * ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : नरेश जी, प्लीज बैठिए। श्री के.सी. त्यागी।

श्री नरेश अग्रवाल : हमसे बड़ा हिंदू कोई नहीं है। हिंदुओं के * ये नहीं हैं। हमें इनसे लाइसेंस नहीं चाहिए। हमने जो बात कही है, बिल्कुल सही कही है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : नरेश जी, प्लीज बैठिए। श्री के.सी. त्यागी। ...(**व्यवधान**)...

श्री नरेश अग्रवाल : सर, मेरा एक ही निवेदन है कि प्रधान मंत्री जी आकर कम-से-कम सरकार की विदेश नीति के बारे में बताएं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने संशोधनों पर बल देता हूं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Tyagiji, please stick to your time limit.

श्री के.सी. त्यागी (बिहार) : धन्यवाद, उपसभापति जी। मैं श्री भुपेन्द्र यादव द्वारा शुरू की गई बहस पर राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में दर्शाए दो-तीन संकेतों के सम्बंध में अपनी बात कहना चाहूंगा।

महोदय, शासक दल भारतीय जनता पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र के पृष्ठ 44 का जिक्र करते हुए अपनी बात शुरू करना चाहूंगा। इसमें कृषि के सम्बंध में उल्लेख है कि ऐसे कदम उठाए जाएंगे, जिससे कि कृषि क्षेत्र में लाभ बढ़े। सर, सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका विचाराधीन है, जिसमें कई किसान संगठनों ने मांग की है कि भारतीय जनता पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र को जस-का-तस लागू किया जाए, जो चुनाव में वायदे किए गए थे, उन्हें पूरा किया जाए। उस पर केन्द्र सरकार ने जो एफीडेविट दिया है, उसमें कहा गया है कि मूल्य निर्धारण नीति, इनकम पॉलिसी नहीं है। ऐसे में अगर एमएसपी में 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो गयी, तो बाजार का संतुलन बिगड़ जाएगा और इससे बाजार के तबाह होने का भी खतरा है। सर, जब हम चुनाव में वोट मांगने के लिए जाते हैं, तब हमारे वायदे कुछ और होते हैं और उसके बाद के वायदे कुछ और होते हैं। Sir, the Minimum Support Price recommended by CACP and fixed by the Government of India crop year, मेरे पास 2013, 2014 और 2015 के आंकड़े हैं, इन्हें मैं ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले मित्रों को बताना चाहता हूं। इस बारे में भी एक बहुत रोचक तथ्य है। माननीय मोदी सरकार के मंत्रियों की सूची है, जिसमें इन्होंने दर्शाया है कि कौन रूरल थिंकिंग के हैं और कौन अर्बन थिंकिंग के हैं। सर, 63 मंत्रियों में से सिर्फ 7 मंत्री ऐसे हैं जिन्होंने पते में अपने गांव का नाम व डाकखाना लिखवाया है, बाकी सारे अर्बन बाइस्ड हैं। उनके अर्बन पते हैं, इसलिए उनकी सोच में अगर गांव नहीं आते, तो मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं है और न मैं उनका विरोध करने के लिए खड़ा हूं। लेकिन It shows the mindset of the Ministry formed by Shri Narendra Modiji. सिर्फ 9 मंत्रियों के पते गांव के डाकखाने के हैं, बाकी सारे अर्बन लोग हैं। सर, एमएसपी को पार्लियामेंट के चुनाव के दौरान 50 परसेंट कहा और अब कह रहे हैं 3 परसेंट। सर, ये आंकड़े आपके सामने प्रस्तुत हैं।

*Not recorded.

सर, देश के अंदर गांव के लोगों की हालत बहुत खराब है और इस बारे में सिर्फ हमारी और आपकी ही नहीं बल्कि सारे देश की चिंता होनी चाहिए। सर, मैं यहां बाजार में उपलब्ध कुछ ताजे आंकड़े प्रस्तुत करना चाहता हूं। जब किसान के यहां फसल होती है और जब वह शहर में आती है, उनमें फर्क की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। सर, इस समय एक किलो आलू का दाम 5 से 7 रुपए किलो है, लेकिन पोटेटो चिप्स का बाजार में दाम 350 रुपए किलो है, आलू 5 से 7 रुपए किलो के हिसाब से हमारे खेतों में होता है, लेकिन उसकी फ्रेंच फ्राइज़ का बाजार में दाम 550 रुपए किलो होता है। सर, मक्का इस समय 16 रुपए किलो है, इसका कॉर्नफ्लेक्स बाजार में 400 रुपए किलो के हिसाब से बिकता है, इसका स्वीट कॉर्न का भाव है 800 रुपए किलो, पॉपकॉर्न बिकता है 600 रुपए किलो के भाव से। सर, गेहूं का भाव है 17 रुपए किलो, दलिया का भाव 90 रुपए किलो है। मिल्क का भाव है 35 से 40 रुपए किलो, पनीर शहर में 200 रुपए के हिसाब से बिकता है। सर, हमारे नोएडा और गुड़गांव में जमीन 100 रुपए से 400 रुपए मीटर के हिसाब से जाती है। और जब उसका लैंड यूज़ चेंज हो जाता है, तो वह जमीन पचास हजार रूपए से लेकर चार लाख रूपए पर स्क्वेयर मीटर जाती है। यह दुनिया उन लोगों की है, जो देश के अंदर दौलत पैदा करते हैं। यह दुनिया उन लोगों की है, जो पसीना बहाने का नहीं, सुखाने का काम करते हैं। मैं अपनी बात इसी लैंड एक्विजिशन एक्ट पर कहना चाहता हूँ। हमारे मित्र भाई जेटली साहब इस वक्त यहां पर नहीं हैं, मुझे बहुत वेदना हुई, जब उन्होंने भी कहा और प्रधान मंत्री जी ने भी कहा कि डिफेन्स के लिए जमीन चाहिए तो क्या पाकिस्तान से पूछें? आप यह बात किन किसानों से कह रहे हैं? वे लोग, जो अपनी जमीन भी देते हैं और भारतमाता की रक्षा करने के लिए अपने बेटे भी वहां बॉर्डर पर भेजते हैं। हिंदुस्तान के लिए जो मरने वाले लोग हैं, उनमें 92 परसेंट लड़के गांव के मरे हैं और 8 परसेंट शहर के मरे हैं और आप गांव के लोगों से कहते हैं कि जमीन के लिए क्या हम पाकिस्तान के पास जाएं? ...(**व्यवधान**)... ऐसा डेरोगेटरी कॉमेंट आप गांव ...(**व्यवधान**)... प्लीज, प्लीज। ..(**व्यवधान**)... प्रधान मंत्री जी का बयान है।

श्री प्रभात झा: ऐसा नहीं कहा। उनके कहने का भाव यह नहीं था। ...(**व्यवधान**)...

श्री के.सी.त्यागी: क्या भाव था? आप बता दीजिए। आप उनके प्रवक्ता हैं, आप बता दीजिए। ...(**व्यवधान**)...सर, मैं किसी के लिए कोई अपमानजनक भाषा इस्तेमाल नहीं कर रहा हूँ। प्रधान मंत्री जी ने ऐसा कहा, हमारे मित्र जेटली साहब ने भी कहा है कि रक्षा के कामों के लिए जमीन अधिग्रहण करना मुश्किल हो गया है और इतनी लंबी प्रक्रिया है कि क्या पाकिस्तान से पूछने के लिए जाएंगे। हम तो अपने बच्चे भी मरवा रहे हैं, जमीन भी दे रहे हैं और हम ही लोगों पर आरोप भी है। इसीलिए मैं इसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति जी, जिन लोगों को गेहूं और जौ के खेत का पता नहीं। ...(**व्यवधान**)... प्लीज, मैं किसी को डिस्टब नहीं करता। जिनको गेहूं और जौ का पता नहीं, जिनको यह पता नहीं कि हरी मिर्च बोई जाती है या लाल मिर्च बोई जाती है, वे देश के नीति निर्धारक बने हुए हैं। मैं किसी बेईमानी का आरोप नहीं लगा रहा, मैं कोई भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा रहा। आप लोगों में से कुछ लोगों का माइंड-सेट इस तरह का है और उसके आधार पर ही आप नीतियां बना रहे हैं। ज्वार और बाजरे का

[श्री के.सी. त्यागी]

आपको पता नहीं। SEZ में लूट हुई। लगभग 45 हजार हेक्टेयर जमीन अधिग्रहीत की गई, चाहे वह उस सरकार के अध्यादेश से हुई हो या इस सरकार के, मगर उसमें लुटने वाले किसान थे। इसमें से सिर्फ 48 हजार हेक्टेयर जमीन पर काम हुआ है, बाकी जमीन बड़े-बड़े उद्योगपतियों के कारखानों के लिए इस्तेमाल हो रही है। इसका हम विरोध करते हैं, तो आप कहते हैं कि हम देशद्रोही हैं, हमें देश की प्रगति से वास्ता नहीं है। इस तरह के लूट के किस्से सामने आते हैं और उन पर कोई कार्रवाई नहीं होती है।

महोदय, इसके बाद इस सदी का जो सबसे बड़ा समर्पण है, मैं उसका जिक्र करना चाहूंगा। जनरल नियाजी का सबसे बड़ा समर्पण था, इंडो-पाक वार में बगैर लड़े ही 90 हजार लोग सरेंडर कर गए थे। उधर 26 अक्तूबर, 1947 को जो डोगरा रियासत थी, उसका हिंदुस्तान के अंदर राजा हरिश् चन्द्र जी के जरिए विलय हुआ। उसका उस दिन से कुछ प्रजा परिषद के लोग विरोध कर रहे थे, जिसका नाम बाद में जम्मू-कश्मीर के अंदर भारतीय जनसंघ रखा गया। यह हिस्टॉरिकल रिपॉर्ट है। ये नहीं चाहते थे कि वहां की राजशाही समाप्त हो और इन्हीं के मित्रों ने कहा था, मेरे पास वह वक्तव्य है, नेपाल की राजशाही बनी रहे, उसके समर्थन में भी जाकर एक बड़े नेता ने समर्थन किया था। अब हमारे मित्र कह रहे हैं, जैसा कॉमन मिनिमम प्रोग्राम में लिखा गया है, I would read it: "The coalition Government will facilitate and help initiate a substantial and meaningful dialogue with all internal stakeholders, including Hurriyat Conference." And what does the Hurriyat Conference say? I quote the manifesto: "Jammu and Kashmir is a disputed territory and India's 'control' on it is not justified. It supports the Pakistani claim that 'Kashmir is the unfinished agenda of Partition' and needs to be solved 'as per the aspirations of the people of Jammu & Kashmir'." ...*(Time-bell rings)*... माननीय उपसभापति महोदय, इससे बड़ा बिट्रेयल आजादी के बाद कोई नहीं हुआ। हम लोग खुद चाहते हैं, लेकिन आज पाकिस्तान से तब बात हो रही है जब वहां की सरकार का मुखिया कह रहा है। मुझे याद है, जब हुरियत के एक नेता ने पाकिस्तान के एक एम्बैसेडर के साथ चाय पी तब आपने पाकिस्तान के साथ सैक्रेट्री लैवल का वार्तालाप खत्म कर दिया। काठमांडू का चित्र हमने देखा है। वहां नवाज शरीफ की तरफ हमारे देश के प्रधान मंत्री ने देखना भी गवारा नहीं किया, जो कि डिप्लोमेसी और प्रोटोकौल के खिलाफ है। डिप्लोमेसी में नाराज भी होते हैं, लेकिन मुंह नहीं फुलाते। आप वहां मुंह फुलाए बैठे रहे। आज क्या हो रहा है? आज आप हुरियत से भी बात करने के लिए तैयार हैं। जिस जमीन को लेकर डॉ. जितेन्द्र सिंह और श्री लीला करण शर्मा ने 61 दिन तक जम्मू बन्द कराया क्योंकि अमरनाथ श्राइन बोर्ड को जमीन दी गई, उसके खिलाफ जब पी.डी.पी. ने आन्दोलन किया, तो हमने कश्मीर में ब्लॉकेड कर दिया।

सर, राजनीतिक अवसरवादिता देखिए। चुनाव के बाद भी नापाक गठबंधन हुए। हमारे मित्र श्री गुलाम नबी आज़ाद साहब की वहां सरकार थी। उसकी कुर्बानी चढ़ी, लेकिन राजनीतिक अवसरवाद इस सीमा तक जाएगा, यह किसी ने सोचा भी नहीं था कि आप जब चाहेंगे, जिसके साथ चाहेंगे गठबंधन कर लेंगे। आपकी पार्टी और आपके नेता कहते हैं कि कोई पोस्ट-पॉल अलाइंस नहीं होना

चाहिए। ...(**व्यवधान**)... कृपया मुझे सुन लीजिए। Just a minute, please. जब हमारा और श्री लालू प्रसाद जी का गठबंधन होता है, तो श्री गिरिराज जी आपको परेशानी होती है। जब आपका और पी.डी.पी. का गठबंधन होता है, तो किसी को कोई परेशानी नहीं होती। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः ओ.के. प्लीज अब आप समाप्त कीजिए।

श्री के.सी. त्यागीः सर, मैं समाप्त कर रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः त्यागी जी, अब आप कृपया कनक्लूड कीजिए।

श्री के.सी. त्यागीः सर, मेरा एक अंतिम बिन्दु है, जिसके बारे में बोलकर मैं अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

सर, विदेश नीति कोई कांग्रेस की बपौती नहीं थी, बल्कि यह आजादी के आंदोलन से निकली हुई धारा थी। आपने एक महीने में कितनी दुनिया बदल दी। जापान और चीन का झगड़ा है। अपना झगड़ा सुलझाने में वे दोनों देश सक्षम हैं, लेकिन आप जाइंट कम्युनिक जारी करते हैं कि हम वहां भी दखल देंगे, जिसके कारण आपके चीन से रातोंरात रिश्ते खराब हो गए। आप यलो सी रिवर में जाने वाले कौन हो, आप कौन हो, मलैका के इलाके में जाकर अमरीका का व्यापार कराने वाले, लेकिन आपने जाइंट कम्युनिक में जिक्र कर दिया कि आई.एस. का जो खतरा है, उस पर सूचनाएं भी शेयर करेंगे, बल्कि यदि आवश्यकता हुई, तो भारतीय सेना खाड़ी के मुल्क में इजरायल और अमरीका, दोनों के साथ जाकर लड़ेगी, Which is against the basic interest of the nation.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Now, please conclude.

श्री के. सी. त्यागी : सर, रूस हमारा दोस्त है। हर संकट में काम आया। जब ओबामा साहब यहां पर थे, तो उन्होंने यूक्रेन की नीति को लेकर रूस की आलोचना की। हम अपनी जमीन को रूस के खिलाफ इस्तेमाल होने दे रहे हैं, जैसे कि उनके सैन्य संगठन, नाटो के हम मैम्बर हैं। सर, हमारी विदेश नीति की नींव रखी गई है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : ठीक है। ठीक है। हो गया। अब आप बैठिए। आपने ज्यादा टाइम ले लिया।

श्री के.सी. त्यागीः सर, आगे की बात यह है कि ...(**व्यवधान**)... आप गरीब और अमीर के एक साथ हमदर्द नहीं हो सकते। यह शहर के लोगों और कॉरपोरेट सैक्टर के लोगों की सरकार है। ...(**व्यवधान**)...और मैं इसका विरोध करता हूं।

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAYS) 2014-15

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Now, I am allowing Shri Suresh Prabhu to lay the papers showing the Supplementary Demands for Grants on the Table of the House.